गाँव जो गायब हो गया

लेखनः एन ग्रैफिल्कोनी

चित्रः कादिर नैल्सन

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

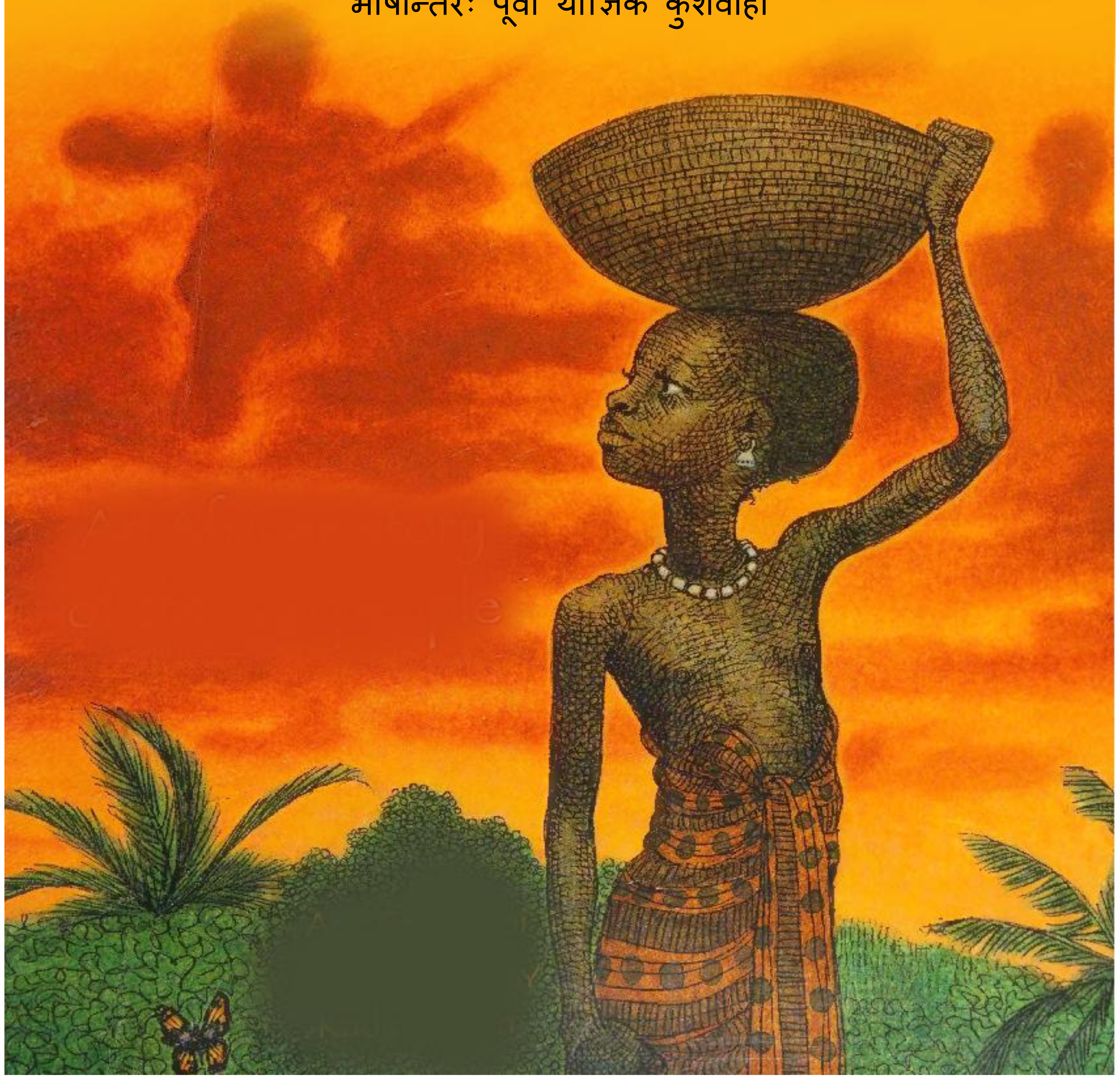

“मेरे गिर्द आ कर बैठो,
मेरे लोगों!

और अपने पुरखों की

आवाज़ों को सुनो ...”

एक पूरा का पूरा गाँव गुलामों के सौदागरों से छिप जाता है। उन्हें खुद को बचाने के लिए अपनी आस्था के अलावा भी कुछ चाहिए होगा - उन्हें चाहिए होगा साहस!

एन ग्रैफिल्कोनी की इस कथा में किस्सागोई की मौखिक परंपरा की अनुगूंज है। वे अफ्रीका के याओ कबीले के इतिहास से इस प्रेरणास्प्रद कथा को पेश कर रही हैं।

गाँव जो गायब हो गया

लेखनः एन ग्रैफिल्कोनी

चित्रः कादिर नैल्सन

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

लेखिका की कलम से

यह कहानी अफ्रीकी लोक किस्सागोई की शैली को प्रतिबिम्बित करती है, जिसके द्वारा अफ्रीका में परंपरागत रूप से ज्ञान प्रसारित किया जाता था: स्थानीय बुजुर्ग या पेशेवर किस्सागो (जिन्हें अक्सर ग्रिओट का जाता था) वह इन कहानियों या नीतिकथाओं को सुनाया करता था। रात को बच्चे आग के गिर्द इकट्ठा होते थे और किस्सागो या बुजुर्ग को सुनते थे। वह अपनी कहानियों को पहेलियों, कहावतों, के सहारे सुनाता और सुनने वालों को एक जादूई जाल में बांध देता था। वह एक ही कथा को हर बार कुछ अलग तरह से सुनाता था। इस प्रकार किस्सागोई के जादू और रहस्य से हर बच्चा अपनी तरह से अपने कबीले की मिथकों, उसके इतिहास को जानता था। इन्हें कथाओं के दृष्टान्तों से वह यह भी सीखता था कि उसे जीवन में कैसा आचरण करना है।

अतीत के अद्भुत तरीकों को - वे सबको भविष्य की राह दिखाएं!

-ए. जी.

दादी वेरली तथा डॉरथी के लिए, सप्रेम

-के. एन.

"...आओ मेरे लोगों, मेरे गिर्द बैठो!

सुनो अपने पुरखों की आवाज़ों को,

साहस और त्याग की इस कथा में!

छोटी अबिकानीले रुकी रही, पाखी-सी स्थिर, पानी के किनारे उगे सरकंडों-सी लम्बी। एक तितली अबिकानीले के पास से फड़फड़ाती गुज़री, पर अबिकानीले (जिसके याओ नाम का मतलब था "सुनना") कतई न हिली। वह अपनी माँ की दुआ को ध्यान से सुन रही थीः

"ओ मेरे पुरखों की आत्माओं!
ओ मेरी दादियों,नानियों,
ओ मेरे पिता, मेरी बहन आत्माओं!
हमें सुनो हमारी ज़रूरत के वक्त!

"सुन रही मैं तुम पुरखों की आवाज़ों को
गा रहे तुम घास और पेड़ों में,
हवा में, पानी में . . .
ज़रूरत है मुझे तुम्हारे जादू की!

"न करना इन्कार
मुझे और मेरे बच्चों को दो तुम
मगरमच्छों की गोपनीयता
अपने पानी के नीचे।

"ओ मेरे पुरखों की आत्माओं
ज़रूरत है हमें तुम्हारे जादू की
हमारे गाँव की करो रक्षा
रखो तुम हमें आज़ाद!"

अबिकानीले ने अपनी माँ को प्रार्थना खत्म कर खड़े होते देखा। उसका लम्बा ताकतवर शरीर डूबते सूरज के प्रकाश में लाल छाया-आकृति बना रहा था। माँ ने चढ़ावे के फूल को नदी की तेज़ धारा में बहाया और वह जंगल की दिशा में बढ़ गया।

तब उसकी माँ, (जिसके नाम न्जमीले का मतलब ईमानदार होता है) थकी-हारी, चिन्तित-सी घर के लिए चल दी। अबिकानीले ने सावधानी से अपने पैर माँ के पाँवों के छापों पर धरे। वह जानती थी कि माँ इतनी शिद्दत से दुआ क्यों कर रही थी। इसलिए, क्योंकि हो सकता था कि उन्हें अपना वतन, अपनी जन्मभूमि छोड़नी पड़े - वह भी जल्द ही।

गुलामों के सौदागर जो आने वाले थे।

"ये उत्तर के हिंसक लोग हैं!" माँ ने बताया था। "वे अपने घोड़ों पर सवार हो तेज़ी से आते हैं। अपनी बन्दूकें दागते हुए। वे अपनी राह में बढ़ते हुए निहत्थे किसानों को बन्दी बना लेते हैं!"

और अबिकानीले ने तो यह तक सुना था कि वे कभी-कभार याओ बच्चों तक को उठा ले जाते हैं।

"पर वे हम पर हमला क्यों करते हैं?" उसने माँ से पूछा था।

"हम ताकतवर और मेहनतकश लोग जो हैं!" न्जमीले ने जवाब दिया था। "सो वे हमें, हमारे श्रम को बेचते हैं! वे हमारे लोगों को बेड़ियों में जकड़ देते हैं, और तब हमें विदेशियों को गुलामों की तरह बेच देते हैं।

इतना तो सब जानते थे कि हमलावर सबसे पहले उन लोगों को कैद करेंगे जो अकेले शिकार पर निकले हों, या जो गाँव की पहरेदारी कर रहे हों। तब वे गाँव में घुसेंगे - जहाँ उन्हें रोक सकने वाला कोई होगा ही नहीं!

"अब तक," न्जमीले ने अबिकानीले को छाती से चिपकाते हुए कहा था, "हमारा गाँव उनके हमले से बचा रह है, शायद इसलिए कि वह जंगलों से घिरा है। पर जल्द ही गुलामों के सौदागर इसे ढूंढ ही लेंगे।"

"तो हम क्या कर सकते हैं माँ?" अबिकानीले ने जानना चाहा था।

"आहह, मेरी एक योजना है, बशर्ते गाँव वाले मान लें तो।"

अबिकानीले को लगने लगा कि काश वह भी माँ की तरह दुआ करना जानती, ताकि गाँव को बचाने में माँ की मदद कर पाती!

जब अबिकानीले और न्जमीले लौटे पूरा गाँव याओ बनाने वाली सात झोंपड़ियों के बीच इकट्ठा था। एक पहरेदार अभी-अभी यह ख़बर ले कर आया ही था कि गुलामों के सौदागरों ने पास के गाँव पर हमला कर दिया था। वहाँ इस खबर देने वाले के सिवा कोई बचा ही नहीं था, सब कैद कर लिए गए थे। उस याओ के सभी नौजवान शिकारी, और दूर चैकसी कर रहे पहरेदार भी पकड़ लिए गए होंगे!

“आय हाय!” एक बुजुर्ग ने थरथराते हुए कहा, “हमारे भी ताकतवर नौजवान शिकार पर गए हुए हैं, हमें आखिर कौन बचाएगा?”

“अब हम करें तो क्या?” गाँव वालों ने घबरा कर कहा। अबिकानीले ने इधर-उधर नज़र दौड़ाई, वहाँ सिर्फ औरतें, बच्चे, छोटे लड़के और बूढ़े आदमी ही थे।

तब न्जमीले बोली उठी। “मेरी एक योजना है, आप कहें तो बताऊँ?”

“हाँ!” बुजुर्गाेंं ने इशारा किया। न्जमीले आगे बढ़ी, लम्बी और सीधे तनी हुई।

“हमें यहाँ से हट जाना होगा। धुंए की तरह गायब हो जाना होगा!” उसने ज़ोर देकर कहा।

“क्या कह रही हो न्जमीले? हम जादूगर नहीं जो फूंक माते ही गायब हो जाएं! ऐसे समय में मज़ाक करना ठीक नहीं!”

“मेरा मतलब है कि हमें जंगल में चले जाना होगा,” न्जमीले ने समझाया। “हमें अपने गाँव का नामो-निशान मिटा देना होगा। ताकि सौदागरों को पता ही न चले कि हम यहाँ रहते भी थे,” उसने ज़ोर देकर कहा। “और हमें तब तक जंगल में छिपे रहना होगा, जब तक वे लौट न जाएं।”

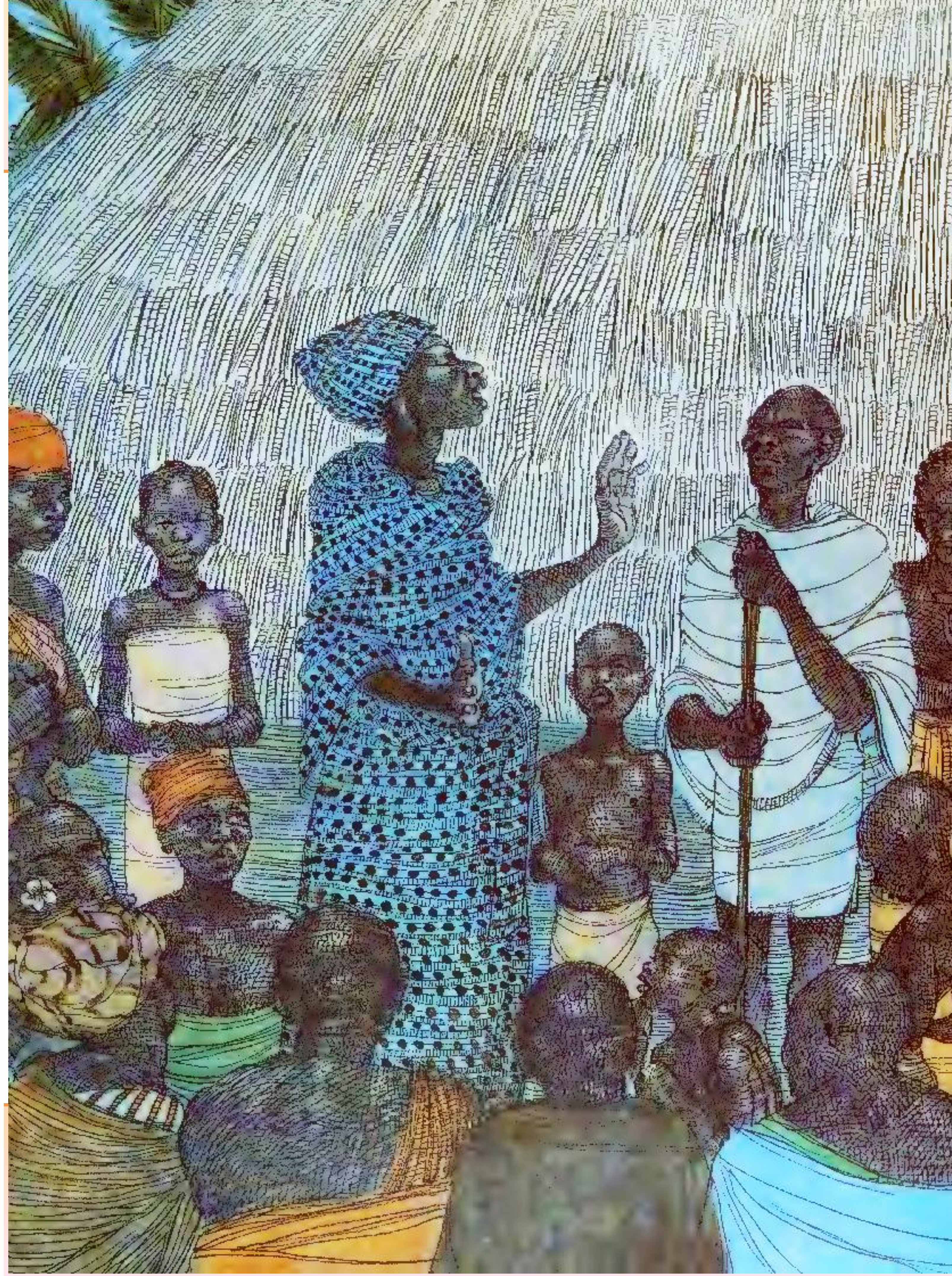

तब अबिकानीले की दादी चिमवाहला (जिसका मतलब पत्थर होता है, और जो अब तक पत्थर जैसी चुप भी थी) बोल उठी। "हाँ, हमारे बच्चों को महफ़ूज़ रखने के लिए तुम लोगों को तेज़ी से और जल्द ही चले जाना चाहिए।"

इस तरह सभी परिवार न्जमीले की योजना को मानने को तैयार हुए और भाग निकलने की तैयारी करने लगे। वे बस उतना ही सामान साथ ले जाने वाले थे, जितना वे पहन या उठा सकें।

पर जब लोग चिमवाहला की मदद करने पहुँचे, बुजुर्गो में भी सबसे बड़ी चिमवाहला ने फिर अपनी आवाज़ उठाई।

"मैं अपना घर छोड़ कर जाने के लिए बहुत ही सुस्त और बूढ़ी हूँ। मैं अपने घर और पुरखों के साथ यहीं रहूँगी!" वे बोलीं, "मगरमच्छ भी बूढ़े झुर्रीदार साँप को नहीं खाता!"

लोगों ने कितनी ही बहस क्यों न की चिमवाहला अपने फैसले से नहीं डिगीं, क्योंकि उनका स्वभाव सचमें पत्थर-सा ही था। कई लोगों ने उन्हें मनाने की कोशिश की, पर उनकी चेतावनियों को सुन वे सिर्फ कुड़कुड़ा कर बोलीं: "मैं उनसे कहूँगी कि मैं जादूगरनी हूँ। वे इससे डर कर मुझे छोड़ देंगे।"

तो गाँव वालों ने थक-हार कर तय कि ऐसा ही हो। संभव हैं गलामों के सौदागरों को बूढ़ी चिमवाहला जंगल में अकेली रहने वाली सन्यासिन ही लगे।

इधर एक परेशान बुजुर्ग ने कहा, "न्जमीले की योजना के हिसाब से हमें गाँव जलाना होगा! पर आग लगाने पर चिमवाहला की झोंपड़ी भी जल जाएगी।"

"तो हम क्या करें?" एक सहमे बच्चे ने पूछा।

यह सुन न्जमीले को लगा कि उसने बात साफ-साफ नहीं बताई है। "हमें धुंए की तरह गायब होना है, पर असली आग के धुंए के साथ नहीं। इससे तो सौदागरों का ध्यान दूर से ही खिंच जाएगा।"

"तो फिर कैसे?" सबसे चिन्तित एक बुर्जुग ने पूछा।

"मैंने एक तरीका सोच रखा है!" न्जमीले ने मुस्कुरा कर कहा।

“हरेक परिवार को अपनी झोंपड़ी तोड़नी होगी, लकड़ी-दर-लकड़ी, पत्थर-दर-पत्थर। और इस मलबे को पीछे वाले जंगल में गाड़ना या छितरा देना होगा।”

कई गाँव वाले यह सुन सकते में आ गए। तब एक समझदार औरत ने सुझाया, “इसके बावजूद हम कुछ डंडे बचा लेंगे। हम उनका इस्तमाल चलने की छड़ियों की तरह कर सकेंगे।”

इस पर दूसरी स्त्री ने कहा “या जंगल में रहने के दौरान हम उनका उपयोग अपने तम्बुओं में कर सकेंगे।”

“जब तक सिर्फ चिमवाहला की झोंपड़ी न रह जाए,” सबसे बड़े बुर्जग ने तालियाँ बजा सबको काम में लगने को कहा।

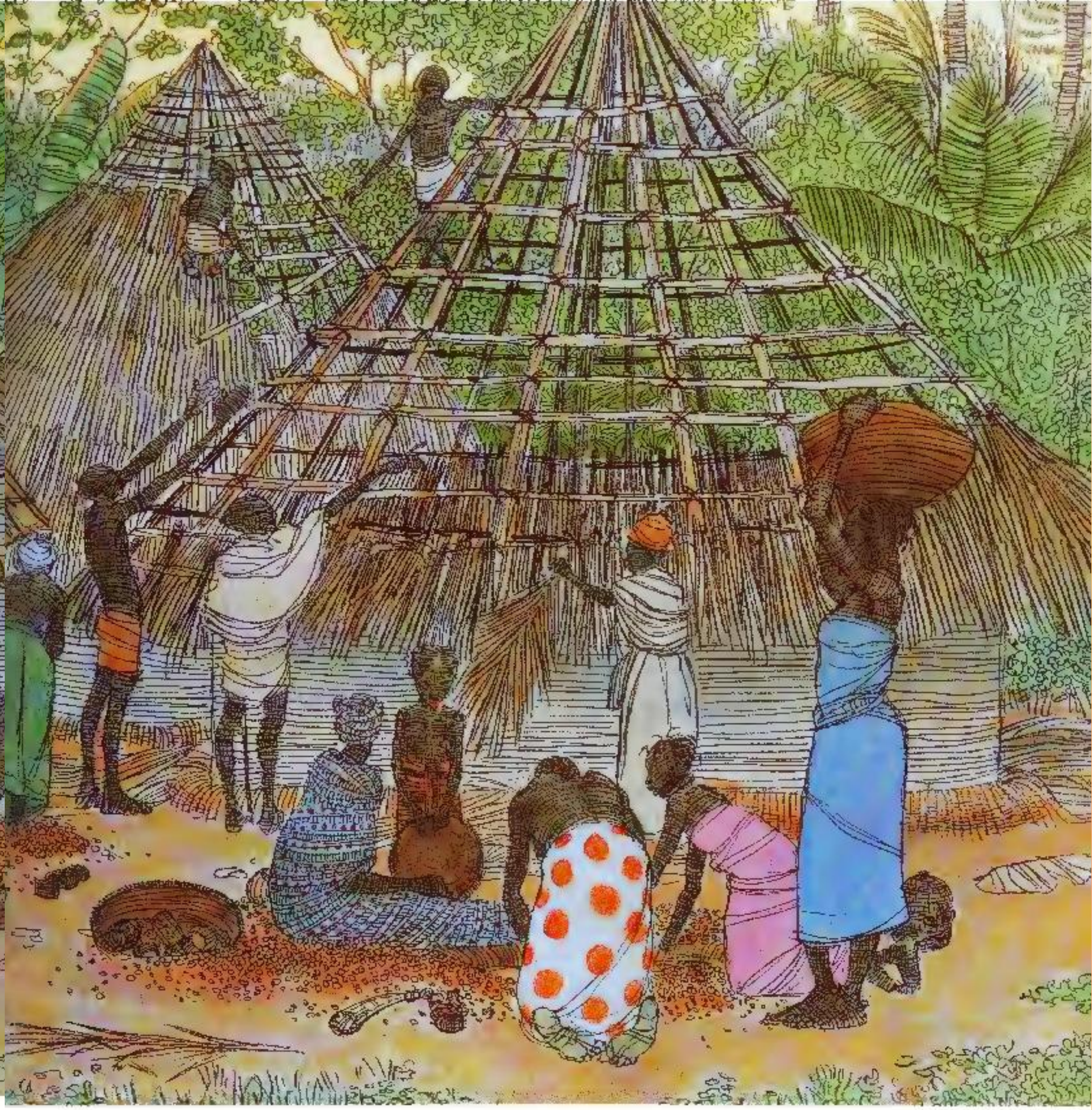

सभी औरतों और ताकतवर किशोरियों ने अपने बड़े बर्तन-भांड़ों में, जिन्हें साथ नहीं ले जाया जा सकता था, अपनी कीमती सामान भरा, और उन्हें ज़मीन में गाड़ दिया। यह सोच कि किसी दिन लौट कर वे उन्हें खोद निकालेंगे।

बूढ़े पुरुषों और किशोर लड़कों ने झोंपड़ियों को उखाड़ना शुरु किया, छड़ी-दर-छड़ी, पत्थर-दर-पत्थर, जब तक कि वह जगह जहाँ वे पहले खड़ी थीं, खाली न हो गई। तब उन्होंने खुरपियों और पंजों की मदद से मिट्टी को समतल कर दिया। अब सिर्फ चिमवाहला की मक्की की कतारें ही बची थीं।

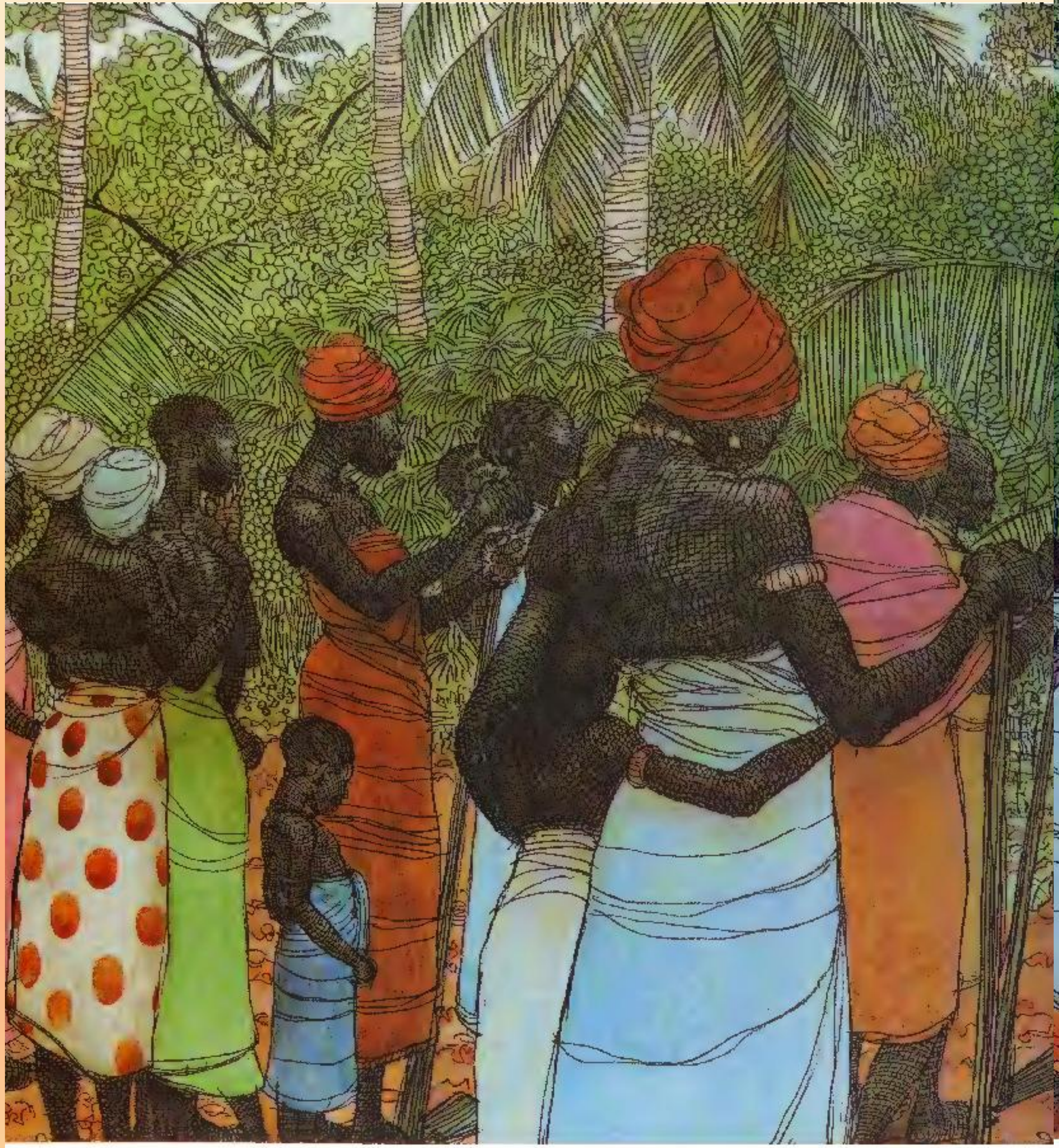

जल्द ही ऐसा लगने लगा कि मानो चिमवाहला की झोंपड़ी हमेशा से निपट अकेली वहाँ खड़ी थी, जिसके इर्द-गिर्द सब्ज़ियों का बाग और मक्की की कतारें थीं। लोग तब कुछ कदम पीछे हट खड़े हुए, अपने पंजों की टेक लगाए। उनके आँसू उस धरती को भिगा रहे थे, जहाँ उनके घर हुआ करते थे। चारों ओर ताज़ी खोदी माटी की गंध उठ रही थी।

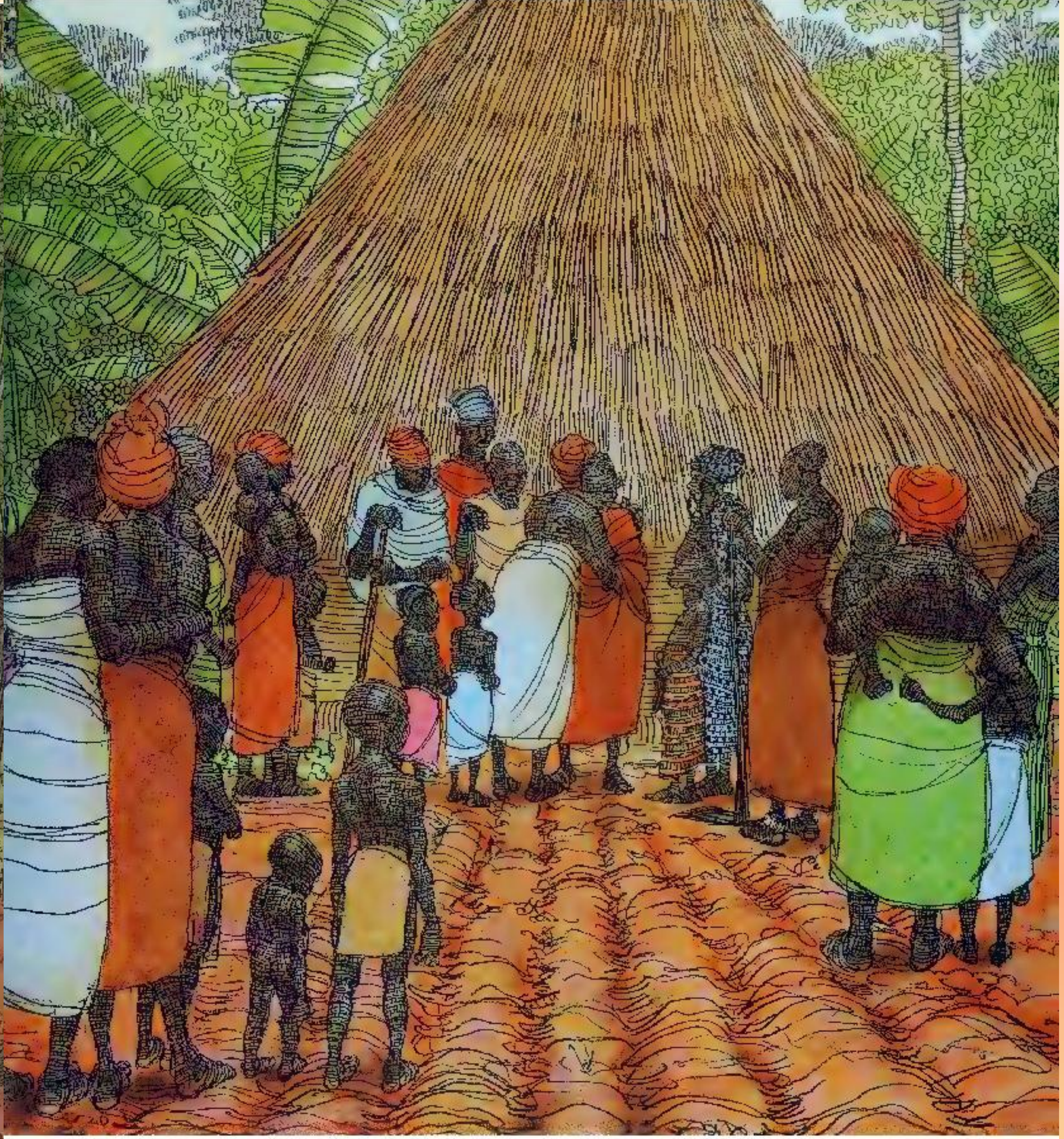

अब आबिकानीले और न्जमीले का रोने और विदा लेने का समय था। चिमवाहला ने दोनों को दृढ़ता से गले लगाया, और सिर्फ इतना भर कहा, "मैं यहाँ पुरखों के साथ रहूँगी। और जब भी तुम लौटो हम तुम्हारा स्वागत करेंगे।"

"काश वह दिन जल्द आए!" अबिकानीले और न्जमीले ने फुसफुसा कर कहा और चिमवाहला के सामने सिर झुका कर विदा ली। वे चिमवाहला को छोड़ दूर खड़े गाँव वालों की ओर बढ़ गईं।

जब याओ के लोग जंगल की ओर बढ़े उनके मन दुखी थे, वे उस जगह को छोड़ रहे थे जहाँ वे पैदा हुए थे। पलट कर देखने पर उन्हें चिमवाहला अपनी झोंपड़ी की दहलीज पर बैठी दिखी, पत्थर के बुत-सी स्थिर और चुप!

सभी लोग एक कतार में उस पगडंडी पर बढ़े जो जंगल की ओर जाती थी। पर जल्द ही चैड़े पाट ओर तेज़ बहाव वाली नदी ने उनका रास्त रोक दिया।

"गहरे जंगल तक जाने के लिए हमें नदी पार करनी होगी," एक बुज़ुर्ग ने कहा।

"पर कैसे?" सभी एक साथ बोल पड़े। "हम किसान तैर कहाँ सकते हैं।"

"हमारे पास नावें नहीं हैं!" "नदी बहुत गहरी है और बहाव बेहद तेज़। हम इसे पार नहीं कर सकते!"

पूरा कबीला नदी किनारे हताश खड़ा हो गया। इतने में सबसे लम्बे बच्चे आगे दौडे ताकि वह जगह तलाश लें, जहाँ नदी का पाट संकरा और पानी उथला हो। जहाँ सब नदी को पार कर सकें।

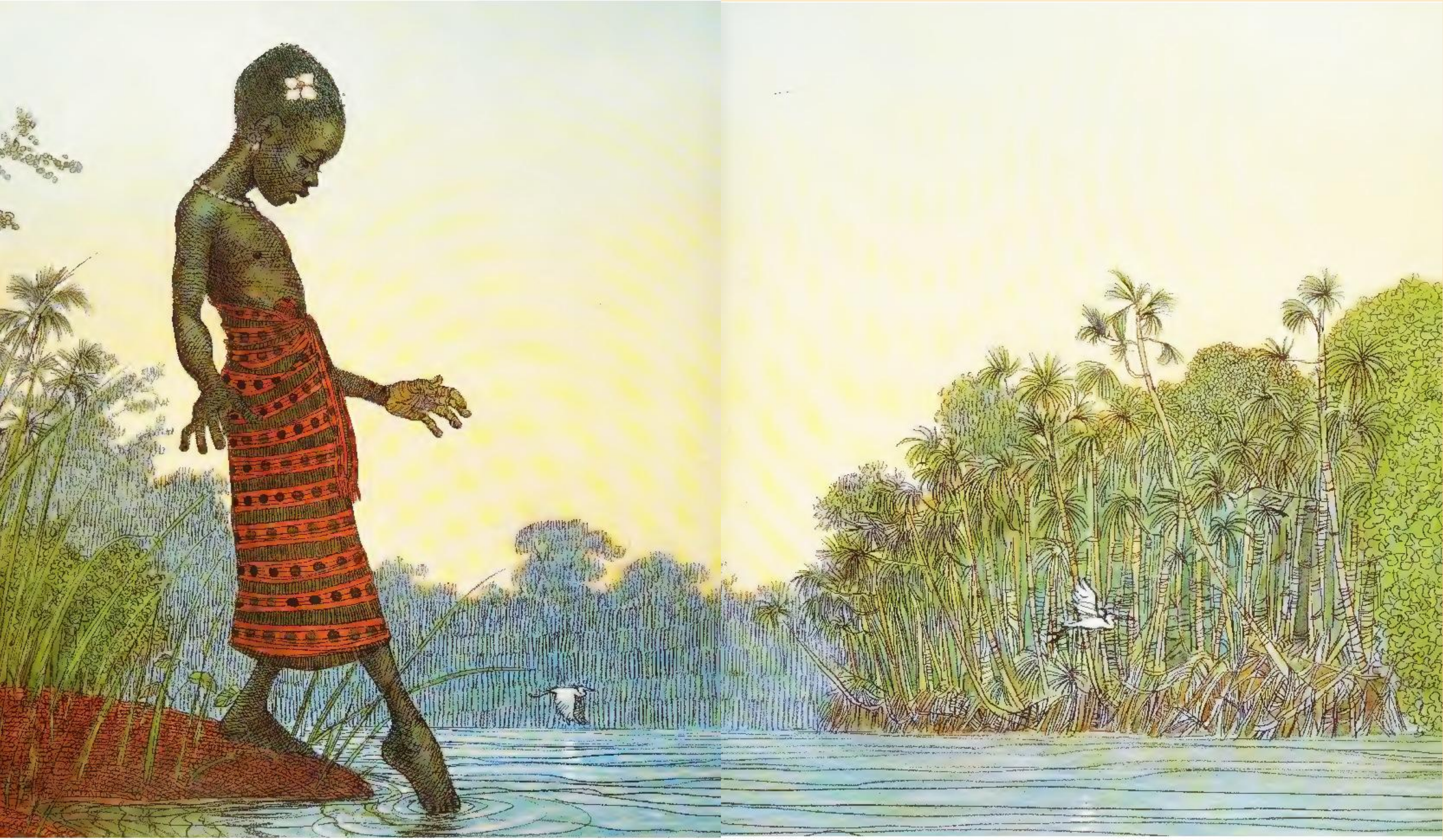

अबिकानीले सबसे फर्तीली थी, वह बाकियों को पीछे छोड़ दौड़ी। वह उस जगह दौड़ी जहाँ वह माँ की दुआ के वक्त खड़ी हुई थी।

वहाँ पहुँचने पर अबिकानीले ने पाया कि नदी बेशक संकरी थी। पर वह उथली भी है या नहीं, यह उसे जाँच कर देखना था। पर कैसे? उसे तैरना तो आता नहीं था।

तब अबिकानीले ने सोचाः क्या हम उसी जंगल में नहीं जहाँ हमारे स्नेहिल पुरखे सभी वस्तुओं मे बसते हैं?

उसने अपनी माँ की दुआ को याद किया। कैसी थी वह दुआ? क्या वह भी दुआ कर सकती थी? तब दुआ के शब्द मानो उसके अन्दर से बह आए, उसने उन्हें हौले से उच्चाराः

"ओ, पुरखों की आत्माओं!

ओ मेरी माताओं, ओ मेरे पिताओं,

ओ मेरे भाईयों . . . मेरी बहनों की आत्माओं!

हमें सुनो हमारी ज़रूरत के समय,

नहीं करो इन्कार, इस समय

ज़रूरत है हमें तुम्हारे जादू की!"

क्या पानी के बारे में भी कुछ नहीं था क्या उस दुआ में? ओ हाँ! अबिकानीले को याद आया।

"मगरमच्छों की गोपनीयता, तुम्हारे पानी के नीचे!

ओ मेरे पुरखों की आत्माओं!

ज़रूरत है हमें तुम्हारे जादू की!"

अबिकानीले रुकी, उसने ध्यान से सुना, अपनी दुआ के जवाब की उम्मीद के साथ। तब उसे अपने गालों पर ठन्डक महसूस हुई। उसने फरफराहट सुनी। पत्ते उस हवा में कांपने लगे जो जंगल से उठ उसके गिर्द छाने लगी थी।

हवा ने नदी की सतह पर थपेड़े लगाए। हल्की लहरें उठने लगीं और उन गोल पत्थरों से टकराईं जिनकी एक कतार इस पार से उस पार तक जा रही थी!

क्या सचमें वहाँ गोल पत्थरों से एक रास्ता बना था, या अबिकानीले सपना देख रही थी? उसे डर था कि उस पत्थर पर पैर रखते ही वह डूब न जाए।

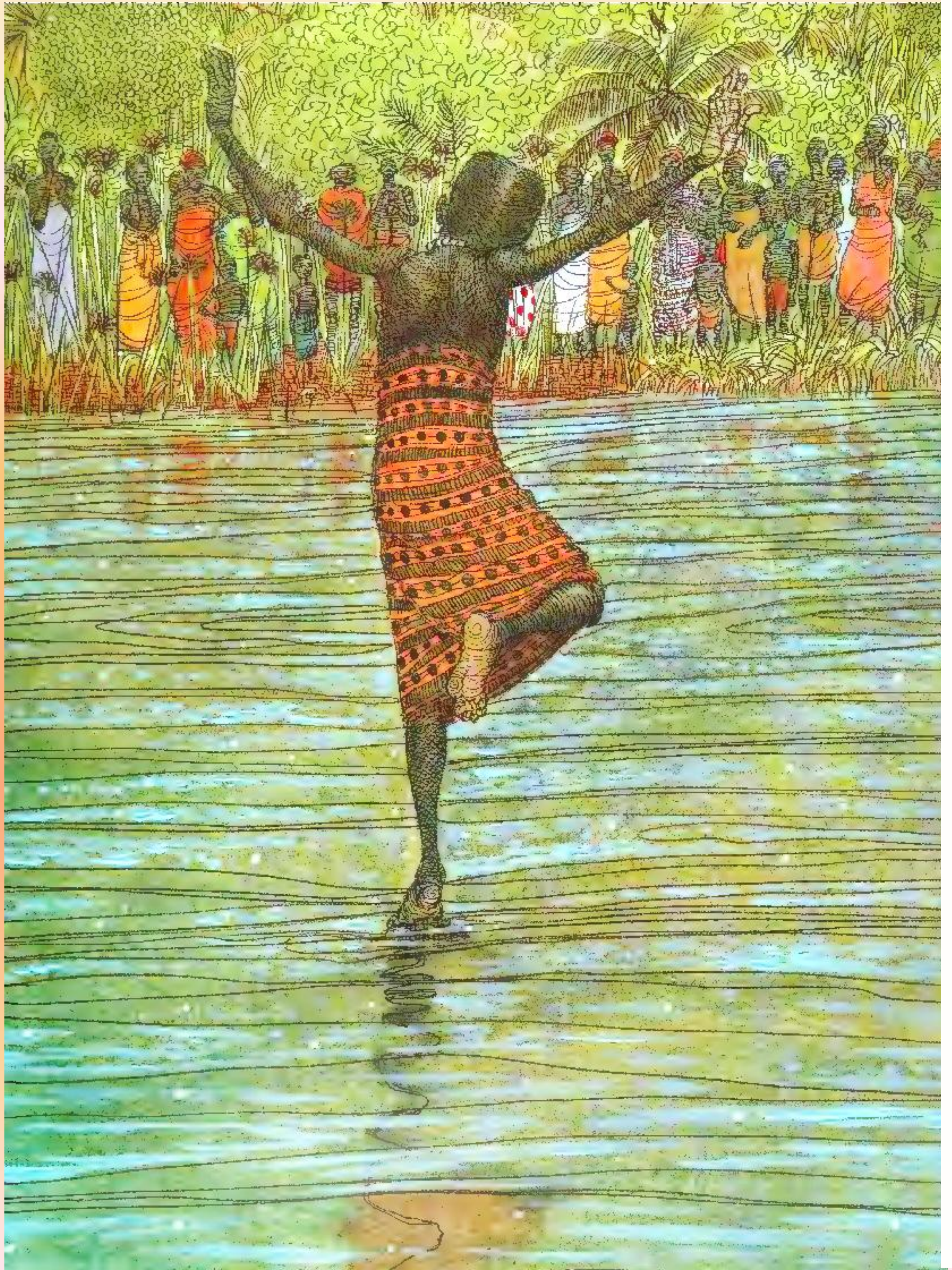

अपनी दादी जैसी मज़बूत बनने की कोशिश कर आबिकानीले ने एक फिसलन भरे, पर ठोस पत्थर पर पैर रखा . . . तब दूसरे पर, उसके बाद अगले पत्थर पर . . . उसकी हिम्मत बढ़ती गई। वह उन पत्थरों पर नाचती-सी आगे बढ़ती गई और नदी के दूसरे किनार पर पहुँच गई।

जब वह आखिरी पत्थर पर थी, उसने पलट कर आवाज़ लगाई, "आओ! मुझे रास्ता मिल गया। नदी को पार करने का सबसे संकरा रास्ता यही है!"

अब तक बाकि लोग भी उस जगह आ पहुँचे थे, जहाँ से अबिकानीले गई थे। उन्होंने उसे पानी पर खड़े देखा। "जादू!" वे चीखे, उसकी माँ तक। उन्हें डर लग रहा था कि अबिकानीले अचानक डूब जाएगी, और नदी के तेज़ बहाव की चपेट में आ बह जाएगी। "देखो तो," अबिकानीले ज़ोर से हंसी। "पानी के नीचे पत्थर हैं, वे दोनों किनारों को जोड़ते हैं!"

तब वह पत्थरों पर नाचती-सी कुछ पीछे गई, तब वापस आगे बढ़ी, कई बार।

"देखो तो," उसने फिर से दोहराया। "यह महफ़ूज़ है! आओ तो!"

सभी लोग नदी किनारे इकट्ठा हो चुके थे, पर तेज़ बहाव के कारण आगे बढ़ने से हिचक रहे थे। यह देख पुरखों ने पानी को उछालना बन्द कर दिया। क्या ये सचमें उन पुरखों की ही सन्तानें थीं?

तब न्जमीले, ईमानदार, ने सबको डाँटते हुए कहाः ''क्या तुम्हें कतई हया नहीं आती? क्या हम इतने डरपोक हैं कि आगे बढ़ने से इन्कार करें? क्या एक वृद्धा का त्याग और एक बच्ची के साहस ने हमें यह नहीं सिखाया कि हमें कैसे बरताव करना चाहिए?

''चलो हम उस पार चलें, कहीं ऐसा न हो कि कि हमारी बेवकूफी भरे डर से हम अपने कबीले के भविष्य से ही हाथ न धो बैठें,'' इतना कह अबिकानीले की माँ ने अपनी एक पैर पानी में डाला, तब दूसरा। पूरे संकल्प के साथ, क्योंकि उसे अपनी बेटी के साहस पर विश्वास था।

उसके आगे बढ़ते ही पुरखों की आत्माओं ने फिर से ज़ोरदार फूंक मारी और न्जमीले को लहरों के नीचे के हरेक पत्थर को दिखाया।

अपनी कायरता और आस्था की कमी से शर्मिन्दा हो बाकी लोग भी एक-एक कर न्जमीले के पीछे बढ़े। बूढ़ी स्त्रियों ने अपने घाघरे ऊपर उठाए, और बूढ़े पुरुषों ने छड़ियों से पत्थरों को टटोला। पर बच्चे तो चहकते, शोर मचाते एक से दूसरे पत्थर पर कूदे, जब तक कि याओ की पूरी आबादी नदी पार न पहुँच गई!

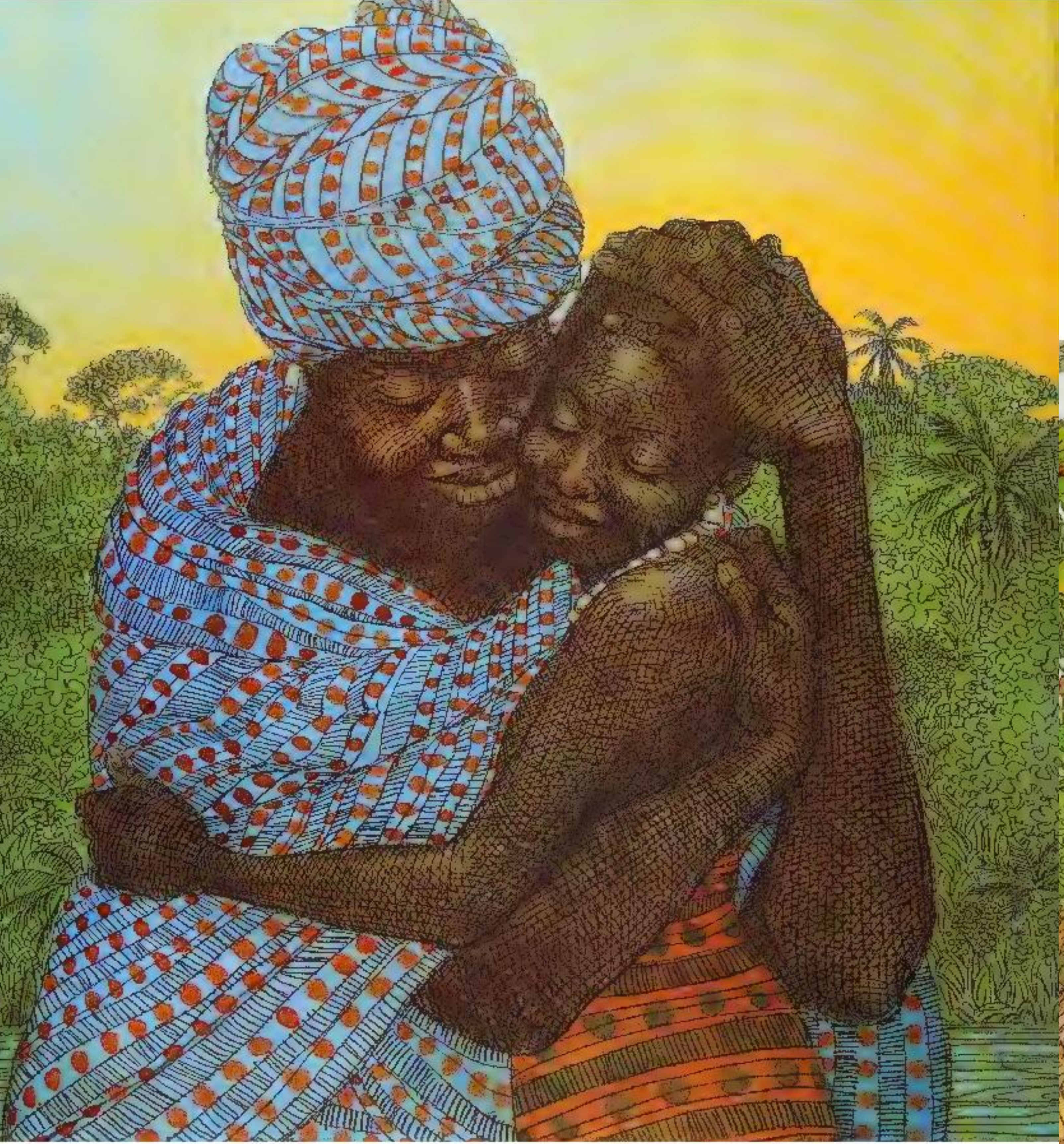

उस पार पहुँच सब अबिकानीले के पास अचरज से भरे पहुँचे। "तुम्हें पानी में पत्थरों का रास्ता भला कैसे मिला?"

"मेरे पहले मेरी माँ ने जो किया उसे करने पर," अबिकानीले ने न्जमीले को देखते कहा। "मैंने भी पुरखों की आत्माओं से दुआ की, और उन्होंने रास्ता दिखलाया!"

यह सुन न्जमीले ने अपनी बहादुर बेटी को गले से लगा लिया।

जब अबिकानीले और उसके याओ के सभी लोग नदी पार कर चुके, वे रहने के लिए घने जंगल की ओर बढ़े। उन्होंने पेड़ों के नीचे साधारण आसरे बनाए। औरतें और बच्चे खाने का जुगाड़ करने जंगल में गए। उन्होंने झाड़ों से बेरियाँ चुनी और पेड़ों से फल। बूढ़ों और किशोर लड़कों ने छोटे पशुओं का शिकार किया और नदी से ताज़ी मछली पकड़ी।

और इसी तरह उनका जीवन चला। उन्हें पता था कि वे बचे रह सकेंगे . . . पर क्या चिमवहाला भी बची होगी?

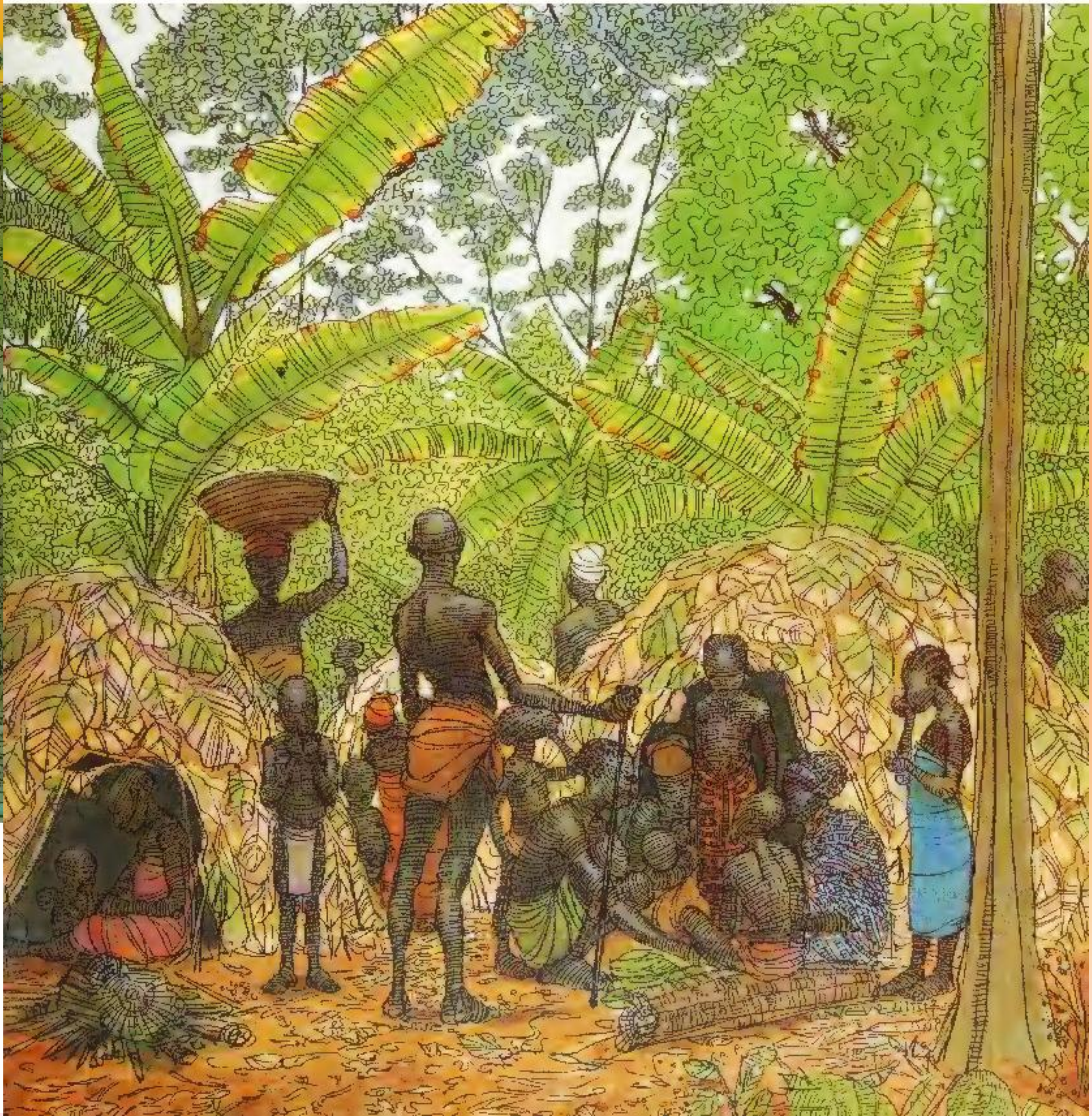

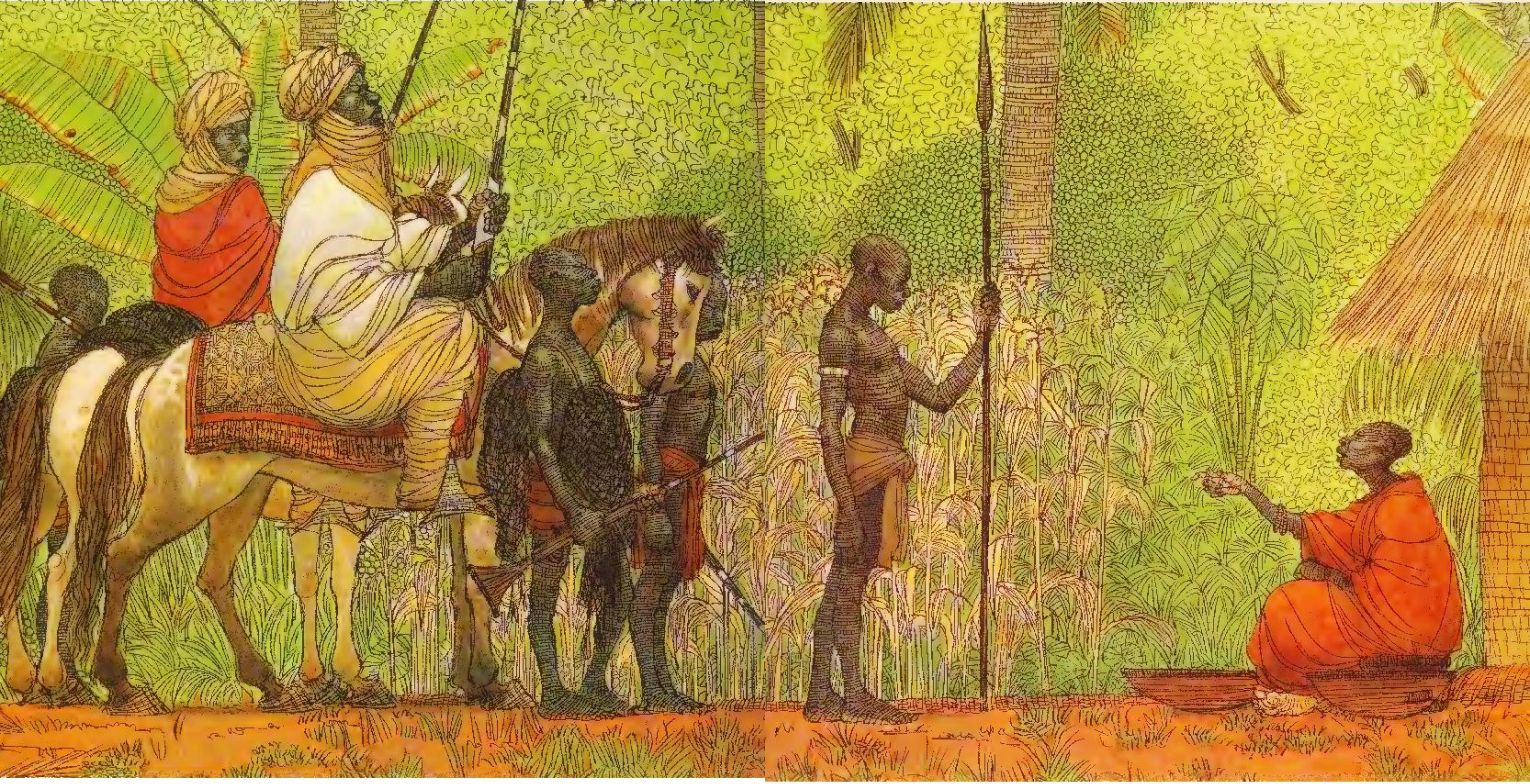

गुलामों के सौदागर याओ गाँव भी पहुँचे (या उस जगह जहाँ कभी गाँव हुआ करता था)। वे घोड़ों पर सवार, चीखते-चिल्लाते, हवा में बन्दूकें दागते आए। ताकि वे गाँव वालों को डरा-धमका कर उन्हें अपने अधीन बना लें। पर तब वे अचानक रुके, उनके मुँह खुले के खुले रह गए। उन्होंने अपने अस्त्र और बन्दूकें नीचे कर लीं।

उन्हें एक इकलौती झोंपड़ी दिखी, जिसके पास ऊँची मक्कियाँ, सेम और रतालू के पौधे थे।

वे जल्दी से उस ओर आगे बढ़े जहाँ चिमवाहला झोंपड़ी की दहलीज़ पर बैठी मटर की फलियाँ छील रही थी। गुलामों के सौदागरों के मुखिया ने शक से भर, डपटते हुए पूछा, ''तुम इन जंगलों में अकेली रहती हो?''

चिमवाहला ने आँखों में एक भारी चमक के साथ कहा, ''मैं भविष्य बूझती-बताती हूँ। इन जंगलों में पवित्र जड़ी-बूटियाँ तलाशती हूँ . . . उनसे नई औषध बनाती हूँ।''

पर मुखिया ने ताज़ी बोई सब्ज़ियों की कतारों की ओर इशारा कर कहा, ''अगर तुम अकेली रहती हो तो इनके बारे में क्या कहती हो? ये तो अभी बोई गई लगती हैं। इतना काम तुम अकेले कर ही नहीं सकतीं!''

पत्थर की सी स्थिरता के साथ चिमवाहला ने जवाब दिया, ''मेरे दूर के रिश्तेदार मेरे लिए आकर बो जाते थे . . . पर अब वे नहीं आते। मैं बस इन्हीं कतारों की देखभाल कर पाती हूँ।''

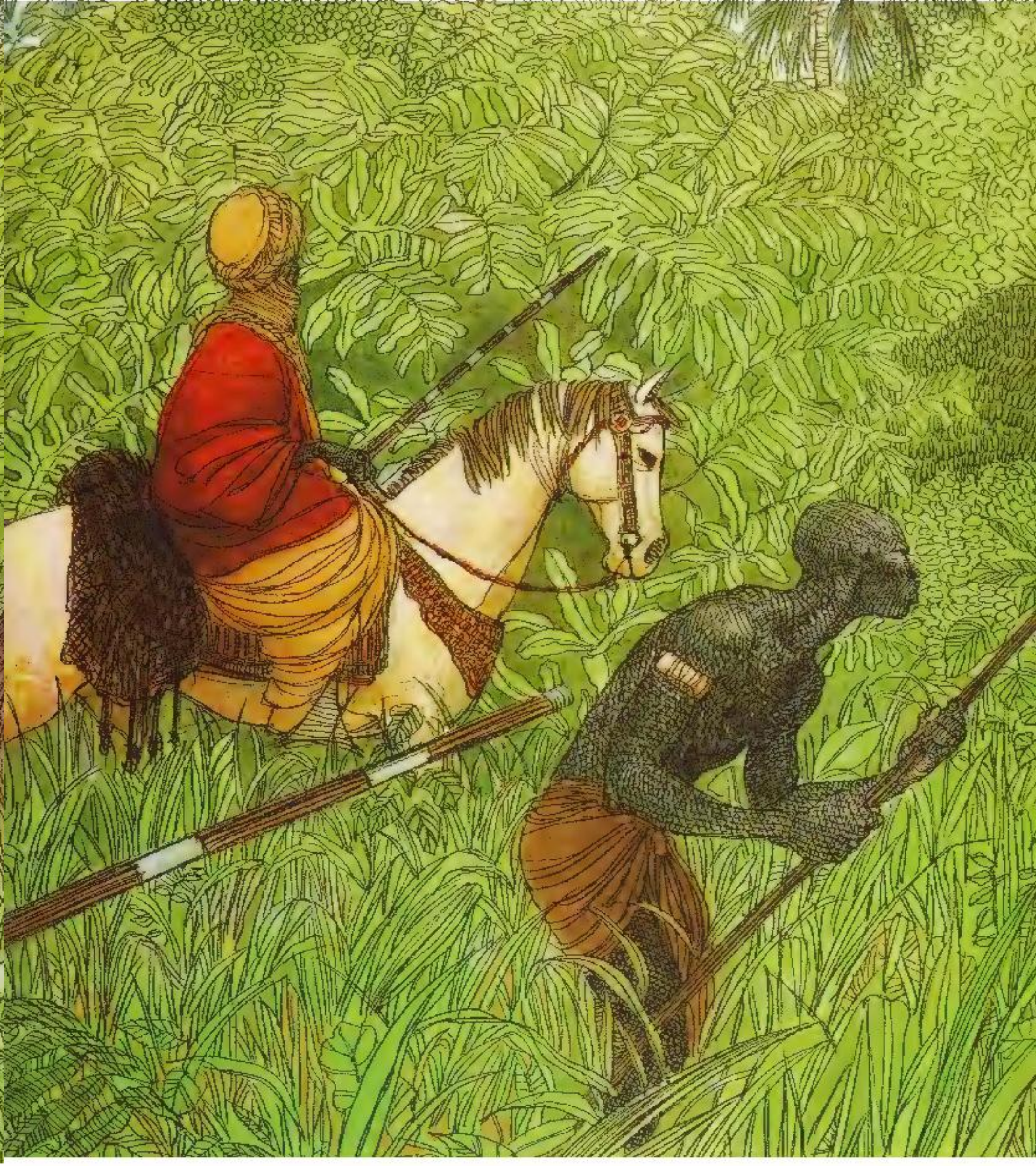

सौदागरों के मुखिया को बात पर पूरा विश्वास न हुआ। उसने अपने साथियों को भेजा कि वे आस-पास की झाड़ियों पर डंडे बरसाएं, यह पता कर लें कि कोई उनके बीच छुपा तो नहीं। उसने अपने खोजियों को दूर तक भी भेजा ताकि यह जाना जा सके कि पास के जंगल में कोई है तो नहीं।

उसके खेजी कई घंटों बाद लौटे। उन्होंने बताया, "हमें कोई भी नहीं मिला। हम नदी तक गए . . . वहाँ नाँव तक नहीं थी। उस पार जाने का कोई दूसरा तरीका है ही नहीं।"

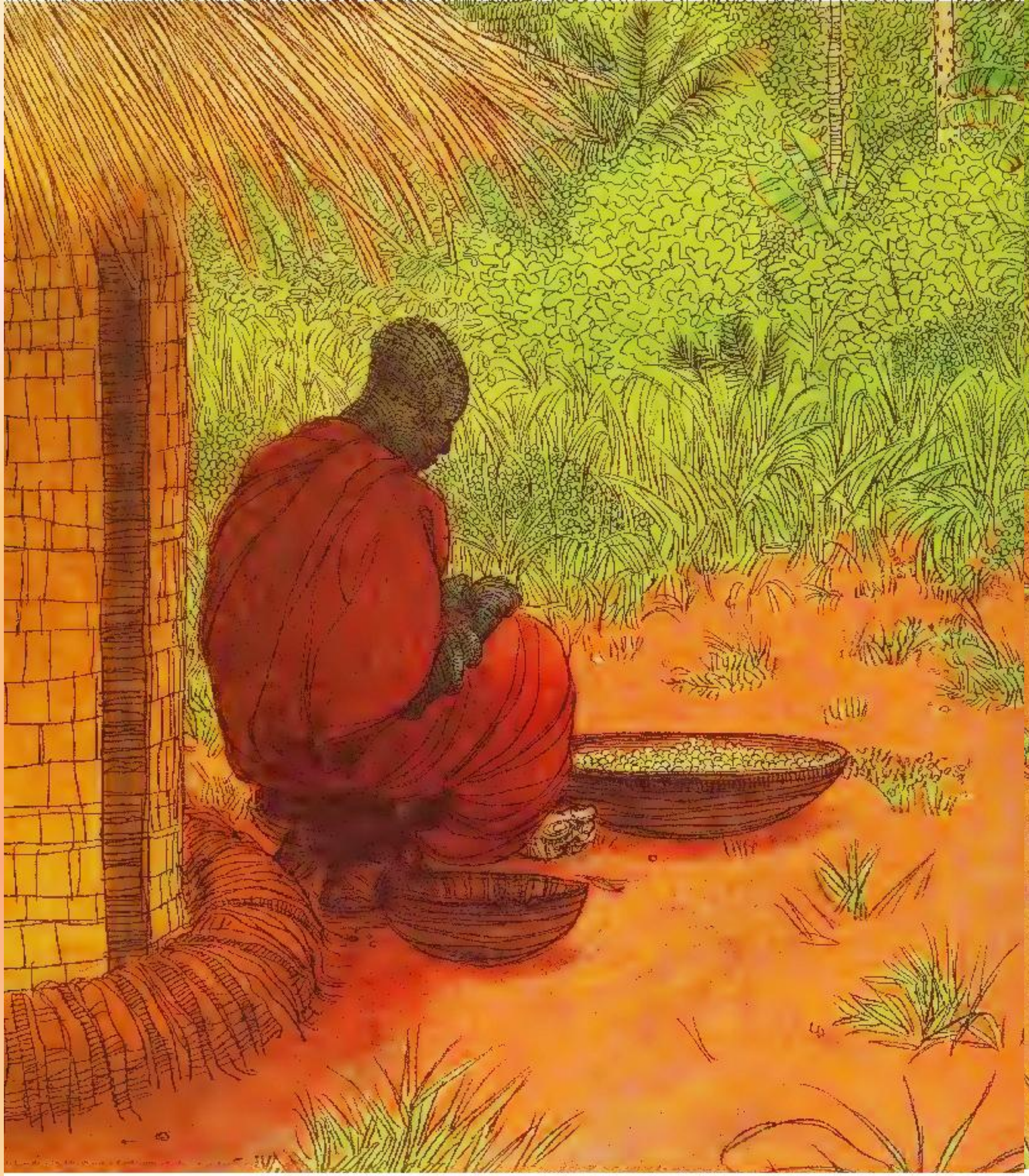

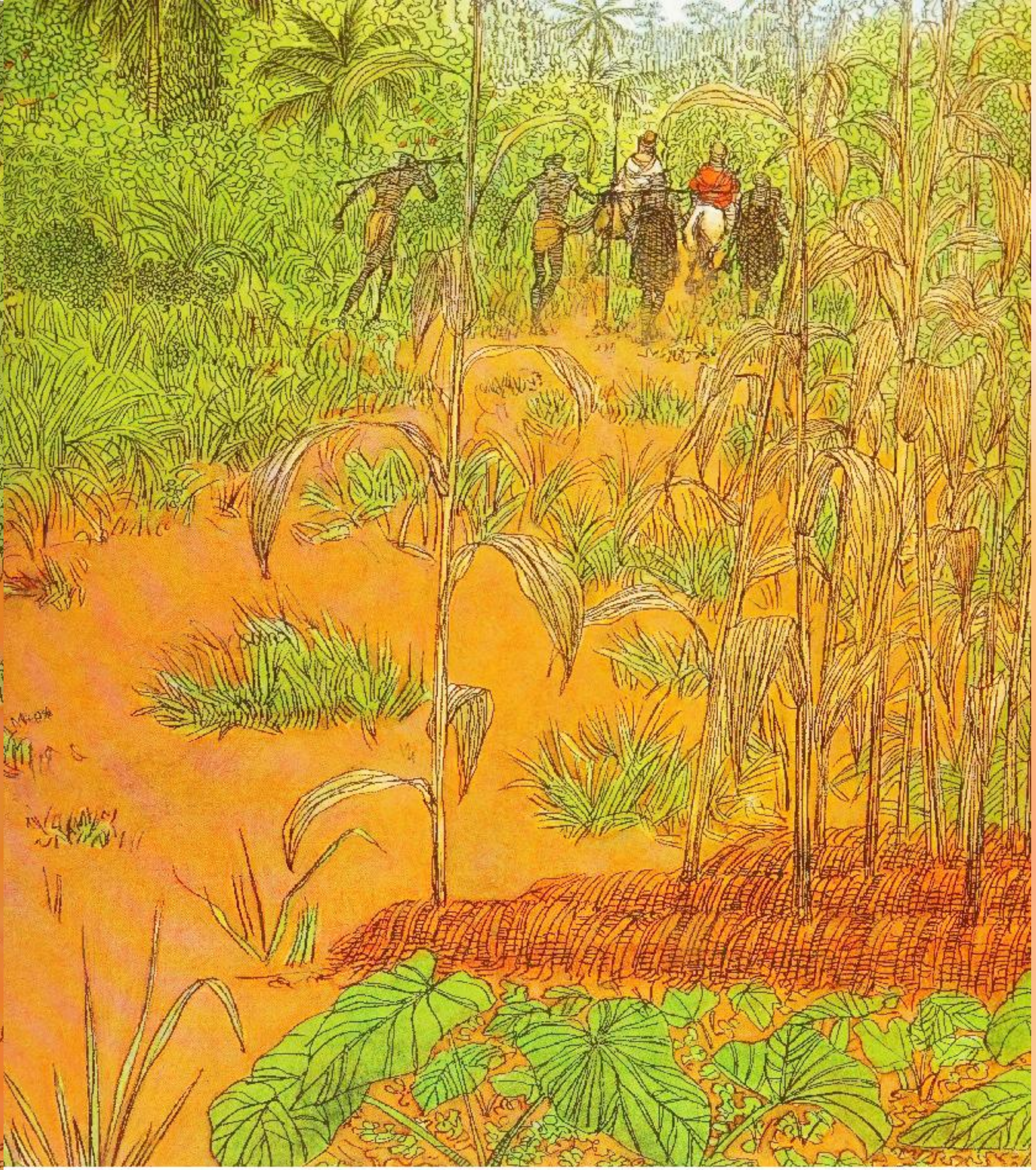

पकड़ने के लिए गुलाम न पा सरदार ने खीझ कर अपने आदमियों से कहा, ''हम अपना समय बरबाद कर रहे हैं। हमारे लिए यहाँ कुछ भी नहीं है, कभी था ही नहीं।''

वे अपने घोड़ों पर चढ़े, उनके खुरों की आवाज़ के साथ वे वहाँ से गायब हुए, और फिर कभी याओ में दिखे ही नहीं। चिमवाहला अपनी देहरी पर बैठे उन्हें जाते देखती रही - उसके पथरीले चेहरे पर एक हल्की-सी मुस्कान खिंच आई थी।

और मेरे बच्चों इस तरह याओ कबीला बचा, और यह कहानी पिछली अनेक पीढ़ियों से चली आ रही है - क्योंकि एक बूढ़ी महिला और एक छोटी लड़की ने तब वह किया जो किया जाना था, जब उनके लोगों पर संकट आया। उन्हें पता था कि अगर पुरखे बोलें तो तुम्हें केवल आस्था के साथ जवाब नहीं देना है, बल्कि साहस के साथ भी!

एन ग्रैफ्लिकोनी को उनकी किताब *द विलेज ऑफ राउण्ड एण्ड स्क्वैयर हाउसेस्* के लिए कैलडिकॉट पुरस्कार से नवाज़ा गया था। उन्होंने अफ्रीका से प्ररित कई फिल्में बनाईं, किताबें लिखीं और उन्हें चित्रित भी किया।

कादिर नैल्सन एक पुरस्कृत अफ्रीकी-अमरीकी कलाकार हैं, जिन्होंने कई आकर्षक पुस्तकों को चित्रित किया है। उन्हें दो बार कैलडिकॉट पुरस्कार से नवाज़ा गया है।